कक्षा-6
हिन्दी - बाल रामकथा
सीता की खोज
(अनुखंड-3)

प्रस्तुतकर्ता : चेतराम वर्मा
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक
परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय-4,मुंबई

सीता की खोज

वनवासी राजकुमार प्रतिदिन सुबह उठते और दक्षिण दिशा की ओर चल पड़ते । एक दिन यात्रा के प्रारंभ में ही एक विशालकाय राक्षस ने उन पर आक्रमण कर दिया । उसका नाम कबंध था । कबंध देखने में बहुत डरावना था । मोटे माँसपिंड जैसा । गर्दन नहीं थी । एक आंख थी । दांत बाहर निकले हुए थे । जीभ साँप की तरह लंबी और लपलपाती हुई ।

सीता की खोज

राम-लक्ष्मण को देखते ही कबंध प्रसन्न हो गया । उसने दोनों हाथ फैलाए । एक-एक हाथ से दोनों भाइयों को पकड़कर हवा में उठा दिया । उसे बैठे-बिठाए मनमाँगा आहार मिल गया था । वह अपने शिकार को भुजाओं में लपेट कर मुँह तक ले जाता इससे पहले ही राम-लक्ष्मण ने अपनी तलवारें निकाल लीं । एक झटके में कबंध के हाथ काट दिए । उसके हाथ धरती पर गिर पड़े ।

सीता की खोज

कबंध उनकी शक्ति और बुद्धि पर आश्चर्य चकित रह गया । “कौन हो तुम दोनों ?” उसने पूछा । हम अयोध्या के महाराज दशरथ के पुत्र राम और लक्ष्मण हैं । रावण ने राम की पत्नी सीता का हरण कर लिया है । हम उन्हीं की खोज में निकले हैं । राक्षस कबंध ने राम के बारे में सुन रखा था। साक्षात उन्हें देखकर प्रसन्न हो गया ।

सीता की खोज

उसने कहा, “मैं सीता के संबंध में कुछ नहीं जानता । लेकिन मेरा एक छोटा सा आग्रह स्वीकार करो तो तुम दोनों की सहायता का उपाय बता सकता हूँ । मेरा अंतिम संस्कार राम करें ।” राम ने इस पर सहमति व्यक्त की तो कबंध बोला, “आप दोनों पंपा सरोवर के निकट ऋष्यमूक पर्वत पर जाएँ । वह वानर राज सुग्रीव का क्षेत्र है। वे निर्वासित जीवन व्यतीत कर रहे हैं । सुग्रीव से मदद का आग्रह कीजिए । उनके पास बहुत बड़ी वानर सेना है । सुग्रीव के वानर सीता को अवश्य खोज निकालेंगे ।”

सीता की खोज

कबंध की साँस टूटने लगी थी । उसका अंत निकट था । राम और लक्ष्मण को अपने निकट बुलाते हुए उसने कहा, “पंपा सरोवर के पास मतंग ऋषि का आश्रम है । वहीं उनकी शिष्या शबरी रहती है । आगे जाने से पूर्व शबरी से अवश्य मिल लें ।” यही बोलते-बोलते कबंध ने प्राण त्याग दिए । राम ने अपना वचन पूरा करते हुए उसका अंतिम संस्कार किया और पंपासर की ओर चल पड़े । कबंध की बातों से राम को बहुत ढाढ़स हुआ। सीता तक पहुँचने की आशा बलवती हुई ।

सीता की खोज

राम को सुग्रीव की क्षमता और उनकी वानर सेना की शक्ति का पता था । वे जल्दी सुग्रीव तक पहुँचना चाहते थे । ऋष्यमूक पर्वत का रास्ता पंपा सरोवर होकर जाता था । पंपासर का प्राकृतिक सौंदर्य अद्भुत था । मतंग ऋषि का आश्रम उसी सरोवर के किनारे था । लता-कुंज से गिरा हुआ । सरोवर का पानी मीठा था । शबरी की कुटिया आश्रम में ही थी । वह ऋषि की शिष्या थी । उसकी आयु बहुत हो गई थी । जर्जर काया । लेकिन आँखें ठीक थीं । हर पल राम की प्रतीक्षा में खुली हुई । ऋषि ने उसे बताया था कि एक दिन राम आश्रम में अवश्य आएँगे और उनसे मिलेंगे ।

सीता की खोज

राम को आश्रम में देखकर शबरी बहुत प्रसन्न हुई। उनकी आवभगत की और सेवा की । खाने को मीठे फल दिए और रहने की जगह दी । उनकी आँखें तृप्त हो गई । राम ने उससे सीता के संबंध में पूछा । “आप सुग्रीव से मित्रता करिए । सीता की खोज में वह अवश्य सहायक होगा । उसके पास विलक्षण शक्ति वाले बंदर हैं ।” शबरी ने राम को आश्वस्त किया । अगले दिन राम ऋष्यमूक पर्वत पर चले गए । उनकी व्याकुलता और घट गई थी । मन की शांति लौट आई थी ।

सीता की खोज

शब्दार्थ

वनवासी = वन में रहने वाले
प्रतिदिन = रोजाना
आक्रमण = हमला
खोज = तलाश
आग्रह = विनती
निर्वासित = स्वदेश से निकाला गया
सरोवर = तालाब
तत्परता = जल्दी से
तृप्त = संतुष्ट होना
विलक्षण = अद्भुत

सीता की खोज

अभ्यास-प्रश्न

प्रश्न-1 कबंध कौन था और कैसा दिखता था?

प्रश्न-2 कंबध ने राम और लक्ष्मण की किस प्रकार सहायता की?

प्रश्न-3 वानरराज सुग्रीव कहाँ रहते थे?

प्रश्न-4 पंपा सरोवर के पास किसका आश्रम था?

प्रश्न-5 शबरी कौन थी और वो कहाँ रहती थी?

प्रश्न-6 पंपा सरोवर की क्या विषेषता थी?

प्रश्न-7 शबरी किसकी प्रतीक्षा में थी और क्यों?